



**आजमगढ़-उ.प्र.** | कृषि मेले में ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित प्रदर्शनी का अवलोकन करने के पश्चात् कृषि राज्यमंत्री सूर्य प्रताप शाही को ईश्वरीय सौगत भेट करते हुए ब्र.कु. रंजन।



**मुखई-डोम्बीवली** | डॉ. राजकुमार कोल्हे को 'यशोगाथा अवॉर्ड-2018' से सम्मानित करते हुए विधायक निर्जन दवकारे। साथ हैं स्वामी सखा पवन भूमि द्रस्ट के अध्यक्ष राजेन्द्र वकरे तथा कार्यक्रम संयोजिका श्रीमति सीमा वकरे।



**तखतपुर-छ.ग.** | 'धर्म व अध्यात्म द्वारा विश्व परिवर्तन' कार्यक्रम में मंचासीन हैं आचार्य महामण्डलेश्वर श्री श्री 1008 डॉ. स्वामी शिवस्वरूपा नन्द सरस्वती जी, ब्र.कु. नारायण, ब्र.कु. पुष्णा तथा ब्र.कु. ममता।



**राजगढ़-म.प्र.** | 'देव प्रबोधिनी एकादशी' के अवसर पर आयोजित चैतन्य झाँकी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. मधु, ब्र.कु. लक्ष्मी, ब्र.कु. वैशाली, ब्र.कु. नम्रता, ब्र.कु. नीलम, ब्र.कु. तेजस्वी, ब्र.कु. भाग्यलक्ष्मी, रिटायर्ड बैंक मैनेजर अरविंद सक्सेना तथा अन्य।



**वाजपुर-उत्तराखण्ड** | विश्व शांति और सद्गवाना के लिए कैंडल यात्रा करते हुए भई-बहनें।



**दिल्ली-पीतमपुरा** | सेवाकेन्द्र की 30वीं वर्षगांठ पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं ब्र.कु. चक्रधारी, ब्र.कु. प्रभा, डॉ. आर.पी. गर्ग, लॉरेल स्कूल के डायरेक्टर सुरेश जी तथा अन्य।

## परमात्मा ने बताई जीवन जीने की विधि

गीता के अठारहवें अध्याय में है कि जीवन के अंदर जो विशिष्ट बातें हैं कि तीन प्रकार की बुद्धि, तीन प्रकार का त्याग, तीन प्रकार के सुख, तीन प्रकार की धारणा की शक्ति, तीन प्रकार के कर्म अर्थात् किस प्रकार का जीवन हमें जीना है, ये हमें खुद निश्चित करना होगा। यदि हमें एक सात्त्विक जीवन जीना है, तो हमारी बुद्धि कैसी होनी चाहिए? हमारी धारणा शक्ति कैसी होनी चाहिए? हमारे कर्म कौन से होने चाहिए और उनसे उपलब्ध सुख किस प्रकार का होता है? इस प्रकार की तीन बातें को और स्पष्ट किया है। सारांश में जीवन जीने की विधि बतायी है।

**अठारहवां अध्याय पूरे सत्रह अध्यायों का सार है।** सन्यास की परम सिद्धि क्या है, उसको भी स्पष्ट किया है। सन्यास का मतलब ये नहीं कि सबकुछ छोड़ देना, अपने कर्तव्यों को छोड़ना, अपनी जिम्मेवारियों को छोड़ना। उसको सन्यास नहीं कहा जाता है।

मनुष्य के अंदर रही हुई आसुरी वृत्तियों का सन्यास, इसकी विशेष प्रेरणा दी है। यहाँ त्याग का अर्थ और मानवीय चेतना तथा कर्म पर प्रकृति के गुणों का प्रभाव समझाते हैं। इस अध्याय में वर्णित संकेत हमारे आंतरिक व्यक्तित्व का बोध कराते हैं कि किस प्रकार के व्यक्तित्व को हमें अपने भीतर से निर्माण करना है और समय प्रति समय हम इन सूचकों के आधार पर अपने व्यक्तित्व का अवलोकन करें कि ये सात्त्विक हैं, राजसिक हैं या तामसिक हैं। उसके आधार पर स्वयं का परिवर्तन करें।

श्रीमद्भगवद् गीता की महिमा तथा उसके स्तर का वर्णन इस प्रकार समझाते हैं। धर्म का सर्वोच्च मार्ग शरणागति है अर्थात् स्वयं को समर्पित कर देना या स्वयं को समर्पित भाव में ले आना है। जो पूर्ण प्रकाश प्रदान करने वाला है और मनुष्य आत्मा को वापिस जाने की समर्थी प्रदान करता है कि किस प्रकार की समर्थी आत्मा में होनी चाहिए। इसमें पहले श्लोक से

लेकर बाहरवें श्लोक तक सन्यास और त्याग का आधार और उनके प्रकार बताये गये हैं। तेरहवें श्लोक से लेकर सत्रहवें श्लोक तक कर्म की सिद्धि में पांच कारण बताए गए हैं। अठारहवें श्लोक से लेकर अद्वाहस्त्रेवं श्लोक तक ज्ञान, कर्म और कर्ता गुण भेद के तीन प्रकार बताए गए हैं। उन्तीसवें श्लोक से पैतीसवें श्लोक तक बुद्धि और धारणा के तीन प्रकार बताए गए हैं। छत्तीसवें श्लोक से उनचालिसवें श्लोक तक तीन प्रकार के सुखों का वर्णन किया गया है। चालिसवें श्लोक से लेकर अड़तालिसवें श्लोक तक वर्णन धर्म के स्वभाव, जन्य कर्म बताए गए हैं। उनचासवें श्लोक से लेकर 54 वें श्लोक तक परमात्मा के निर्देश अनुसार कर्म और शरणागति को स्पष्ट किया गया है।

सङ्गठनवें श्लोक से लेकर के तिहतरवें श्लोक तक गुह्य गीता ज्ञान का महत्व और उसकी उपलब्धि स्पष्ट की गई है।

इस तरह से अठारहवां अध्याय सम्पूर्ण गीता में सबसे बड़े ते बड़ा अध्याय है। जिसके अन्दर कुल में 78 श्लोक हमारे सामने हैं। भगवान से अर्जुन पूछता है कि सन्यास और त्याग का यथार्थ स्वरूप क्या है? इन दोनों के बीच का अन्तर स्पष्ट करने के लिए उसने प्रार्थना की। भगवान कहते हैं : त्याग तीन प्रकार के हैं। यज्ञ, दान और तप। ये कर्म त्याग करने के योग्य नहीं हैं। इंसान को त्याग क्या करना चाहिए, किस बात का सन्यास करना चाहिए ये ज्ञान होना बहुत ज़रूरी है। जो विशेष जीवन के अंदर उपयोगी चीज़ें हैं उसका त्याग करने की बात कही है। यज्ञ, दान और तप ये तीनों कर्म त्याग करने के योग्य नहीं हैं, क्यों? क्योंकि ये मनुष्यों को भी पवित्र करने वाले हैं। नियत कर्म को कर्तव्य समझकर इसमें आसक्ति और फल को त्यागना, ये सात्त्विक त्याग है अर्थात् हर जगह सम्पूर्ण गीता के अंदर यह बात हमने बार बार सुनी है कि आसक्ति का त्याग करो।

- क्रमशः

## यह जीवन है...

मोह में फंसकर आप परमात्मा जैसे प्यारे रिश्ते को कैसे भूल जाते हैं! संसार में अगर कोई भी सच्चा रिश्ता है, तो वह परमात्मा का रिश्ता है। वह कभी पलभर के लिए भी आपको स्वयं से अलग नहीं करता। वह जीते जी और मरने के बाद भी आपका साथ नहीं छोड़ता, तो आप उसे कैसे भूल सकते हैं! इस दुनिया की हर चीज़ उस परमात्मा की दी हुई है। अगर उससे कुछ मांगना ही है, तो उसे ही मांग लें।

## ख्यालों के आँड़िलों में...

**कुछ नेकियां और कुछ अच्छाइयां अपने जीवन में ऐसी भी करनी चाहिए, जिनका ईश्वर के सिवाय कोई और गवाह ना हो।**

**चलो जिन्दगी को ज़िंदादिली से जीने के लिए एक छोटा सा उसूल बनाते हैं। रोज़ कुछ अच्छा याद रखते हैं और कुछ बुरा भूल जाते हैं।**

## ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें....

### कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510  
सम्पर्क - M- 9414006096, 9414182088, Email-omshantimedia@bkvv.org

**सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये,**

**आजीवन 4500 रुपये। विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक)**

**कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या**

**बैंक ड्राफ्ट (पेण्डल एट शांतिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।**